① Bayon Temple

② ~~Angkor Thom~~

Part II-Hoil
P-III (A)

BOYON TEMPLE (बेओन मंदिर)

कम्बुज देश का भग्नावशेष समूह कम्बुज के प्राचीन काल का परिचय देने के लिए अभी भी जस तस अवस्था में मौजूद है जिनमें बियोन मंदिर का भी विशिष्ट स्थान है।

बियोन मंदिर जयवर्मन VII के द्वारा लगभग 1200 ई० में स्थापित किया गया था। यह मंदिर अंकोरथोम नगरी के मध्य में स्थापित है। इस मंदिर में पहुँचने के लिए चारों ओर रास्ते बने हुए हैं।

इस मंदिर की दीवारें पत्थरों से बनायी गयी है। इन पर अनेक प्रकार के चित्र उत्कीर्ण हैं। मंदिर के मुख्य द्वार के सामने मैदान है। इसमें पास में दो ~~कुण्ड~~ पुष्करणियाँ हैं।

इस मंदिर में वीथियाँ भी बनायी गयी हैं। इन वीथियों की छतें कटोराकार गुम्बज की है पर बाहरी भाग में अंकोरवाट के समान टाइलें लगी हुयी हैं।

बियोन मंदिर में शिखरों का भरमार पाया जाता है। इस मंदिर के मुख्य शिखर की ऊँचाई मुख्य शिखरों की अपेक्षा कम है। इन शिखरों में किसी प्रकार के चूने का प्रयोग नहीं किया गया है। शिखरों में चारों ओर त्रिनेत्रधारी शिव का मुख है। उन पर शिव की जटाएँ बारीकी से उत्कीर्ण किये गये हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये जटाएँ कभी सुवर्ण रंजित थी।

इस मंदिर की भित्तियों तथा गैलरियों में बहुत से चित्र उत्कीर्ण किया गया है। इन चित्रों के

Scanned with CamScanner

द्वारा अनेकानेक दृश्यों को दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए कहीं युद्ध का दृश्य है, सेनानायक और सामन्त हाथियों पर बैठे धनुष हाथ में लिए हुए हैं कहीं दाढ़ी वाले ब्राह्मण यज्ञोपवीत पहने वृक्षों की छाया में बैठे हैं, कहीं कुश्ती हो रही है, कहीं वादक वीणा बजा रहा है और नट एवं बाजीगर अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। कहीं राजा केवल धोती पहने और गले में हार डाले खिड़की पर बैठा है और उसके चारों परिचारक खड़े हैं। खिड़की के नीचे सांड हिरण, गैंडा, खरगोश आदि खेले जा रहा है कहीं राजकुमारी पालकी पर जा रही है। कहीं बैल रथ खींच रहा है कहीं मद्दली पकड़ने का दृश्य, कहीं परास्त हुए देशों से अपार धन सम्पत्ति लाते हुए हाथी का दृश्य है।

इस प्रकार सभी प्रकार का दृश्य चित्रों मंदिर के दीवारों पर उत्कीर्ण कर दिखाया गया है। इनमें चित्रों में देखा जाता है कि एक ओर लौकिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाले चित्र हैं तो दूसरी ओर आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाली चित्र है। यही कारण है कि पौराणिक कथाओं देवताओं के माध्यम महाभारत तथा रामायण आदि कथानकों को भी उत्कीर्ण किया गया है। एक चित्र में रुद्र शंकर अपनी तृतीय नेत्र की ज्वाला से कामदेव को भस्म करते हुए दिखाये गये हैं।

राजा जयवर्मन सप्तम बौद्ध धर्मावलम्बी था यही कारण है कि इस मंदिर में बौद्ध मूर्तियां तथा चित्र भी पाये गये हैं। एक चित्र में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर कमल पर खड़े हैं उनके हाथ में कमल, पुस्तक माला और दर्पण है। इतना ही नहीं उनके चारों ओर उड़ती हुई अप्सराएँ भी हैं।

इस मंदिर के सम्बन्ध में विद्वानों ने टीका टिप्पणी भी किये हैं। संदेश के मतानुसार इस मंदिर का सम्बन्ध पूर्वजों से था। कुमार स्वामी का कथन है कि इसमें देवराज लिंग के अतिरिक्त और बहुत सी

Scanned with CamScanner

देवताओं की मूर्तियाँ भी स्थापित की गयी जैसे ब्राह्मण देवताओं में, शिव, विष्णु, देवी तथा इनके अन्यरूप बुद्ध के अतिरिक्त भैषज्य गुरु वैदूर्य प्रभाराज भिक्षु के रूप में कुछ संरक्षक देवता जिसका कम्बुज में मान था तथा देवता रूप में पूर्वजों और उनके प्रतीक जिसका नाम मृत्युपरान्त शासकों को दिया गया था। इस प्रकार बियोन मंदिर में सभी प्रकार के धार्मिक विचारधाराओं का संमिश्रण था।

कम्बुज देश में उपास्यदेव जगत ता राजा अर्थात देवराज था। इसीलिए बियोन मंदिर में उसी की मूर्ति स्थापित थी। लेकिन कम्बुज देश के विविध प्रांतों में स्थानीय देवताओं की भी पूजा होती थी। इन विविध देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी बियोन मंदिर में स्थापित है। इस मंदिर में लोकेश्वर तथा अवलोकितेश्वर की भी मूर्तियाँ थी। ये भी देवाधिदेव देवराज की शक्ति को अभिव्यक्त करती है थी। इस मंदिर में केवल पौराणिक धर्मों और बौद्ध धर्मों का ही बहुत सुन्दर ढंग से समन्वय नहीं था वरन् इसमें सभी धर्मों का समन्वय था।

इस मंदिर के स्थापत्य कला, शिल्पकला, तक्षण कला आदि का स्रोत भारत ही था। फिर भी इसमें स्थानीय कलाकारों ने भी अपनी बुद्धि और कुशलता का परिचय दिया है। बियोन मंदिर में आम दक्षिण पूर्व एशिया के कला के समान एक ओर भारतीय कला की श्रेष्ठता है तो दूसरी ओर स्थानीय कला ने भारतीय कला को अपने रंग में रंग दिया है। इस मंदिर में गुप्तकालीन मंदिर की कला और दक्षिण के गोपुरम् मंदिर की कला दृष्टिगोचर होता है।